

नागार्जुन की कविता में जन चेतना सामाजिक एवं राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में

डॉ. भजनलाल परधान

सहायक प्राध्यापक हिन्दी

शासकीय महाविद्यालय, मझौली जिला जबलपुर (म.प्र.)

Received- 08 July- 2026

Accepted- 10 July- 2026

Published- 30 September-2026

Corresponding Author-

डॉ. भजनलाल परधान

सहायक प्राध्यापक हिन्दी

शासकीय महाविद्यालय, मझौली जिला जबलपुर (म.प्र.)

DOI- <https://doi.org/10.67275/SU.2026.041501>

Funding Policy-

‘Shodh Utkarsh’ is an independent journal and receives no financial support or grant from any public, commercial, or not-for-profit organization.

वित्त पोषण नीति-

‘शोध उत्कर्ष’ एक स्वतंत्र पत्रिका है। इसे किसी भी सार्वजनिक, वाणिज्यिक या गैर-लाभकारी संगठन से कोई वित्तीय सहायता, अनुदान या फंडिंग प्राप्त नहीं होती है।

Copyright Notice -

© 2026 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC-BY 4.0).

कापीराइट सूचना-

© २०२६ लेखक। यह कार्य क्रिएटिव कॉमन्स अ Attribution 4.0 इंटरनेशनल लाइसेंस (CC-BY 4.0) के अंतर्गत लाइसेंस प्राप्त है।



भारतीय समाज की रूढ़ियों तथा अंधविश्वासों छल और प्रवंचनाओं के विरुद्ध यह कहना अतिशयोक्ति पूर्ण ना होगा कि नागार्जुन की सामाजिक अभिव्यक्ति के रूप में जनहित में भले लगते हैं। देखिए उनकी एक कविता की बानगी -

सिकुड़ गई रंग-रंग, झुलस गया अंग अंग

बनकर ठूँठ छोड़ गया पतझर

उलंग असगुन-सा खड़ा रहा कचनार

अचानक उमगी डालों की संधि में छरहरि टहनी

पोर-पोर में गसे थे टूसे

यह तुम थीं।²

सामाजिक चेतना-सामाजिक चेतना वह अपरिभाष्य वस्तु है जो अपने अलग अन्य पदार्थों का ज्ञान अथवा संवेदन करा सके सामान्य तौर पर सामाजिक चेतना का तात्पर्य है सामाजिक जागरण, विकास व उन्नति की भावना से है। सामाजिक चेतना दो अलग-अलग शब्दों से मिलकर बना है; ‘समाज’ और ‘चेतना’। समाज - समूह, संघ, गिरोह, सभा या दल, प्रभृति समाज के पर्याय हैं। अंग्रेजी में इसे सोसायटी, कंपनी, एसोसिएशन, कलेक्शन, असेंबली, कांवल्वे कांग्रेसन मीटिंग विथ कांग्रेस आदि कहा जाता है। और चेतना का अर्थ बुद्धि मनोवृत्ति स्मृति, सुधि ज्ञानात्मक मनोवृत्ति, संज्ञा, होश प्रभृति समाज के चेतना के पर्याय हैं। अंग्रेजी में इसे कान्शसनेस, सेन्स स्टैंडिंग, इंटेलिजेंस आदि कहा जाता है। सामाजिक चेतना वह चौतन्य सत्य है, जिसका उन्नति मूलक ज्ञान मनुष्यों को पशु जगत से ऊपर उठाता है। यह चेतना मनुष्यों की आत्मिक एवं सत्तात्मक एकता का स्वरूप है यह चेतना प्रत्येक सामाजिक में होता है परिणाम स्वरूप संपूर्ण

साहित्य प्रत्येक समाज का प्रतिबिंब होता है। समाज में होने वाली हर छोटी बड़ी घटना को वह बहुत ही बारीकी से देखता है फिर अपनी कलम से नई सोच के साथ उसे लिपिबद्ध करके आम जन तक भेजने का काम करता है।

साहित्य प्रत्येक युग की मनोवृत्ति के अनुरूप होता है, वह युगानुभूतियों को सचित्र उकेरता है। साथ ही मानव को जीवन जीने की हर कैटीली राहों से भिन्न कराता है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, वह समाज से पूर्ण रूप से जुड़ा हुआ होता है, किंतु कुछ ऐसी परिस्थितियां उत्पन्न हो जाती हैं, जिनसे जीवन जीना दभर हो जाता है, तब धीरे से साहित्य मनुष्य होने का अर्थ बताता है और जीवन जीने का सलीका देता है।

मनुष्य वर्तमान सामाजिक मान्यताओं, कृपथाओं से बेहद असंतुष्ट है। बाबा नागार्जुन भी इन सामाजिक मान्यताओं, आकांक्षाओं आदर्शों व परंपराओं से असंतुष्ट हैं, तभी तो वह मानव को चेतना प्रवण बनाकर स्वतंत्र जीवन जीने की सीख दे रहे हैं। उनकी कविताओं में जनता के जीवन संघर्ष राजनीतिक भ्रष्टाचार और सामाजिक अन्याय के प्रति गहरा सरोकार दिखाई देता है।

नागार्जुन की सामाजिक चेतना की पहली मुठभेड़ धर्म की जकड़ बंदी से हुई है। बाबा की जिंदगी की शुरुआत ही अभाव के आंगन से हुई, वे विषम परिस्थितियों में ब्राह्मण होकर भी ब्राह्मण नहीं हैं, बुद्ध शरणम जाकर भी वे बौद्ध नहीं हैं। बाबा नागार्जुन अपनी कविता में लिखते हैं -

कांटों पर नंगा सोया है
ठिठक गया मैं लगा देखने
उस औघड़ बाबा के करतब
गु.....गु.....गु
पिओ संत हुगली का पानी।
पैसा सच है दुनिया कानी।¹

नागार्जुन ही एकमात्र कबीर के बाद रचनाधर्मी कवि हैं, जो कि

मानवता उस मूल चेतना की सूचक है। उपर्युक्त अर्थों से सामाजिक चेतना को इस तरह व्याख्यायित किया जा सकता है - जन समूह की ज्ञानात्मिका मनोवृत्ति का नाम सामाजिक चेतना है।

नागार्जुन की कविता की महत्वपूर्ण विशेषता उसकी प्रखर सामाजिकता है। इसी अर्थ से समाज केंद्रित, लोक केंद्रित, मनुष्य केंद्रित, जनता के कवि जनता के लिए कविता है। सामान्य जन इस कविता का नायक है वह प्राइमरी स्कूल का शिक्षक मुद्गिरिस दुखरन झा हो -

**घुन खाए शहतीरों पर की बारह खड़ी विधाता बांचे,
फटी भीत है छत चूती है आले पर विसतुड़या नाचे,
लगा लगा बेबस बच्चों पर मिनट मिनट में पांच तमाचे
इसी तरह से दुखरन मास्टर गढ़ता है आदम के सांचे।³**

युगीन विषमताओं में जीते हुए नागार्जुन में सामाजिक चेतना ने ही उन्हें जनकवि बना दिया है।

नागार्जुन अपने समाज में निरंतर गिरते हुए मानव मूल्यों को देखे हैं। वह बचपन से ही बाल विवाह अनमेल विवाह, छुआछूत, मूर्ति पूजा, बलि प्रथा, भूत प्रेत पर विश्वास विधवा समस्या देखते आ रहे हैं। इन समस्याओं पर लिखा जाना इसलिए स्वाभाविक है कि वे आज भी जारी है, खत्म होने का नाम ही नहीं लेता समस्याएं ज्यो-का-त्यो बनी हुई है। नागार्जुन सामाजिक चेतना संपन्न रचनाकार हैं। वे उन लदी हुई रूढ़ियों के खिलाफ विद्रोह तो करेंगे ही। सामाजिक व्यवस्था पर नागार्जुन का दृष्टव्य देखिए -

**सपने में भी सच ना बोलना, वरना पकड़े जाओगे
भैया लखनऊ, दिल्ली पहुंचो, मेवा मिसरी पाओगे।
माल मिलेगा रेत सको, यदि गला मजूर किसानों का,
हम मर भूखों से क्या होगा, चरण गहो श्रीमानों का।⁴**

राजनैतिक परिप्रेक्ष्य में - कवि नागार्जुन के साहित्य में सारा हिंदुस्तान बोल रहा है। वह अबोध, सीधा, सरल और ग्राम्य देश के लिए विश्व में होने वाले परिवर्तन की ओर हमें संकेत करती है, साहित्य हमें जीना सिखाती है उसी प्रकार नागार्जुन का साहित्य भी मानव-जीवन मूल्यों के लिए एक पथ प्रदर्शक है, जो उनकी वाणी में मुखर हो उठती है -

**सियासत में/न अड़ाओ
अपनी यह कांपती टांगें/हां, महाराज
राजनीतिक फतवेबाजी से
अलग ही रक्खो अपने को
माला तो है ही तुम्हारे पास
नाम वाम जपने को
भूल जाओ पुराने सपने को।⁵**

नागार्जुन अपने समकालीन कवियों में विशिष्ट स्थान रखते हैं। नागार्जुन की सन साठ के बाद की कविताएं भारत के राजनीतिक जीवन का पूरा-पूरा आंकलन करती है, “आखिर ऐसा क्या कह दिया मैंने” काव्य संग्रह में कहते हैं

**“बेईमान नहीं हूं
मैं सबके साथ इसाफ करता हूं
मैं प्यार भी बांटता हूं
मैं नफरत की भट्टी भी झोंकता हूं。”⁶**

जनता के बीच खड़ा कवि राजनीति से अलग भी नहीं हो सकता। दरअसल जनजीवन अब तिकड़मी भी राजनीति की चक्कर घन्नी में फंसा नाच रहा है। व्यवस्था से हटकर जीवन की क्षति है। राजनीतिक ढोंगियों की पोल खोलता नागार्जुन की काव्य

संग्रह “पुरानी जूतियों का कोरस” से कुछ पंक्तियां उद्धृत है -
**“ढोंगियों की पोल खोल रहा है जीवन
धड़क रहा है जीवन, डोल रहा है जीवन
साहित्य और संस्कृति को तौल रहा है जीवन
चढ़के मौत के सर पै बोल रहा है जीवन
जीवन है राजनीति, राजनीति है जीवन।⁷**

नागार्जुन के साहित्य सृजन में समय या काल परिकल्पना निरंतरता से आयुक्त हो ही नहीं सकता। स्थिति विशेष स्थैतिक हो सकती है किंतु ना सोच स्थैतिक है और ना ही समय। गतिशीलता, परिवर्तनशीलता और निरंतरता सोच और समय की शाश्वत समाहितियां हैं। नागार्जुन ने शुरू-शुरू में ऐसी कविताएं बहुत लिखी; जो समाज के विजयी कहाए हुआ का भेद खोलती है। लेकिन साठ के बाद की कविताओं में उन्होंने मुख्यतः राजनीतिक घटनाओं को विषय बनाया है। उनकी “खिचड़ी विप्लव देखा हमने” कविता में राजनीतिक विचारधारा दृष्टव्य है-

**“शासक बदले झंडा बदला, तीस साल के बाद
नेहरू-शास्त्री और इंदिरा हमें रहेगी याद
जनता बदली नेता बदले, तीस साल के बाद
बदला समर विजेता बदले तीस साल के बाद।⁸**

बाबा की कविताओं में अधिकतर राजनीतिक प्रभावों का दस्तावेज है। यह हमेशा राष्ट्र के साथ रहे और सबको किनारे करते गए। वे लिखते हैं, जन सामान्य हमारे आशाओं का प्राण केंद्र है। जनता में इतना गहरा विश्वास बहुत कम कवियों का है। नागार्जुन ने “शासन की बंदक” नामक कविता में कहा है।

**खड़ी हो गई चांप कर कंकालों की हूक
नभ में विपुल विराट - सी शासन की बंदक
उस हिटलरी गुमान पर सभी रहे हैं थूक
जिसमें कानी हो गई शासन की बंदक
जली ठूठ पर बैठकर गई कोकिला केक
बाल न बांका कर सका शासन की बंदक।⁹**

कवि का रचना संसार काल्पनिक होता है पर वास्तव में नागार्जुन की कविताओं का अध्ययन करके ऐसा प्रतीत होता है कि उनका रचना संसार जनमानस की अभिव्यक्ति के वास्तव में सत्य और शाश्वत हैं नागार्जुन रचना संसार के बेताज-बादशाह के रूप में उभर कर आमजन के सामने आते हुए प्रतीत होते हैं। उनकी कविताओं को केवल और केवल भोग या विलास की कविता नहीं कहा जा सकता, उनकी कविता मानव जीवन के चेतना के रूप में उभरकर सामने स्पष्ट होती है।

अतः हम कह सकते हैं कि नागार्जुन का साहित्य सृजन निराला की भांति सामाजिक और राजनीतिक चेतना का जायजा लेते हैं। वे गांव के खुरदुरे यथार्थ को जिस प्रकार अपनी जीवन दृष्टि से देखते हैं वह इस बात का सबूत है कि नागार्जुन को साहित्य सृजन जन चेतना के प्रति सतर्क हैं तथा उनका पर्दाफाश करते हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची:-

1. नागार्जुन - पथराह आँखें पृष्ठ - 32
2. नामवर सिंह- नागार्जुन प्रतिदिन कविताएं पृ-32
3. हंस जुलाई 1948 संच न बोलना विता
4. शोभाकांत - नागार्जुन रचनावली भाग दो पृ 221
5. सुरेश सलिल - नागार्जुन: प्रतिनिधि से कलंक पृ 107
6. शोभाकांत - नागार्जुन रचनावली भाग दो पृ 147
7. वही पृ - 81
8. नागार्जुन - पुरानी जूतियों का कोरस पृ 48